International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 65-66

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 65-66
www.allresearchjournal.com
Received: 11-09-2015
Accepted: 13-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्वअध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडाहिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्वअध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडाहिप्र

श्रृंगार रस के कवि– विद्यापति

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य में अनेक तरह के लेखकों ने अपने अपने ढंग से हिन्दी साहित्य को स्मृद्ध बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कवि, उपन्यास कार,नाटककार, कहानीकार, तथा अन्य दार्शनिकों ने ज्ञानगंगा बहाई है जिसका प्रवाह अद्यतन अनवरत जारी है तथा आगे भी इसी तरह यह प्रवाह चलता रहेगा।

हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ शुक्ल जी ने सम्वत् 1050 से माना है। वे मानते हैं कि प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आरम्भ होना चाहिए इसे ही वे वीरगाथा काल मानते हैं। [1] उन्होंने इस सन्दर्भ में इस काल की जिन आरम्भिक रचनाओं का उल्लेख किया है उनमें विद्यापति एक प्रमुख रचनाकार हैं तथा उनकी प्रमुख रचनाओं का इस काल में बडा महत्व है। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं–कीर्तिलता कीर्तिपताका तथा पदावली । उनकी और भी रचनाप्र हैं। इसके अतिरिक्त उनकी रचना कीर्तिलता के बारे में यह स्पष्ट लिखा हैकि–ऐसा जान पडता है कि कीर्ति लता बहुत कुछ उसी शैली में लिखी गइ थी जिसमें चन्दबरदाई ने पृथ्वी राजरासो लिखा था। यह भृंग और भृंगी के संवाद–रूप में हैं इसमें संस्कृत ओर प्राकृत के छन्दों का प्रयोग हुआा है। संस्कृत और प्राकृत के छन्द रासो में बहुत आए हैं। रासो की भान्ति कीर्तिलता में भी गाथा छन्द का व्यवहार प्राकृत भाषा में हुआा है। [2]

उपरोक्त विवरण से यह तो स्पष्ट है कि विद्यापति को आदि काल की ही परिधि में रखना समीचीन होगा। विद्यापति के पदों में मधुरता और गेयता का गुण अद्वितीय है। आयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔघ ने उनके कान्य की प्रशंसा करते हेए लिखा है– गीत गोविन्द के रचनाकार जयदेव की मधुर पदावली पढ कर जैसा अनुभव होता है, वैसा ही विद्यापति की पदावली पढ कर। अपनी कोकिल कंठता के कारण ही उन्हें मैथिल कोकिल कहा जाता है।

विद्यापति ने संस्कृत, अवहट्ठ, एवं मैथिली में कविता रची। [3] इसके इलावा भूपरिक्रमा पुरुषपरीक्षा, लिखनावली आदि अनेक रचनाप्र साहित्य को दीं।कीर्तिलता और कीर्तिपताका पामक रचनाएं अवहट्ठ में लिखी हैं। पदावली उनकी हिन्दी–रचना हैऔर वही उनकी प्रसिद्धि का कारण हैं।

पदावली में कृष्ण–राधा विषयक श्रृंगार के पद हैं। इनके आधार पर इन्हें हिन्दी में राधा–कृष्ण–विषयक श्रृंगारी काव्य के जन्म दाता के रूप में जाना जाता है। [4]

विद्यापति के श्रृंगारी कवि होने का कारण बिल्कुल स्पष्ट है। वे दरबारी कवि थे और उनके प्रत्येक पद पर दरबारी वातावरण की छाप दिखाई देती है।पदावली में कृष्ण के कामी स्वरूप को चित्रित किया गया है। यहां कृष्ण जिस रूप में चित्रित हैं वैसा चित्रण करने का दुस्साहस कोई भक्त कवि नहीं कर सकता। इसके इलावा राधा जी का भी चित्रण मुग्धा नायिका के रूप मे किंया गया है।

विद्यापति वास्तव में कवि थे उनसे भक्त के समान अपेक्षा करना ठीक नहीं होगा। उन्होंने नायिका के वक्ष स्थल पर पडी हुई मोतियों की माला का जो वर्णन किया है उससे उनके कवि हृदय की भावुकता एवं सौंदर्य अनुभूति का अनुमान लगाया जा सकता है।एक उदाहरण देखिए–

कत न वेदन मोहि देसि मरदाना।
हट नहिं बला, मोहि जुबति जना।
भनई विद्यापति, तनु देव कामा।
एक भए दूखन नाम मोरा बामा।
गिरिवर गरुअपयोधर परसित।
गिय गय मौतिक हारा।
काम कम्बु भरि कनक संभुपरि।
ढारत सेरसरि धारा।

विद्यापति की कविता श्रृंगार और विलास की वस्तु है, उपासना एवं साधना उनका उद्देदश्य नही है। [5] राधा और कृष्ण साधारण स्त्रीपुरुष के रूप में परस्पर प्रेम करते हैं। स्वयं विद्यापति ने अपनी रचना कीर्तिपताका में लिखा है– सीता की विरह वेदना सहन करने के कारण राम को काम–कला–चतुर अनेक स्त्रियों के साथ रहने की वेदना उत्कट इच्छा उन्होंने कृष्णावतार लेकर गोपियों के साथ विभिन्न प्रकार से कामक्रीडा की। अतः स्पष्ट है कि स्वयं कवि की दृष्टि में कृष्ण और राधा श्रृंगार रस के नायक–नायिका ही थे।

विद्यापति ने नारी का नख–शिख वर्णन अपनी कविता में किया है, तथा मूलतः श्रृंगार रस का प्रयोग किया हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उनकी श्रृंगारी मनोवृत्ति थी अतः उनसे भक्त जैसे काव्य–व्यवहार की अपेक्षा करना कदाचिद् एक तरह का उनसे अन्याय ही है।उन पर गीत–गोबिन्द के रचना कार जयदेव का प्रभाव है। [6] गीत गोबिन्द में श्रृंगार रस का भरपूर प्रयोग हुआ है, तथा जो चित्र जयदेव ने श्री कृष्ण का गीतगोबिन्द में प्रस्तुत किया है ठीक वैसा ही चरित्रांकन विद्यापति ने पदावली में किया है। स्पष्ट है जयदेव और विद्यापति ने जो चित्र अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है वह महाभारत कालीन धर्मस्थापना वाले श्रीकृष्ण से नितान्त भिन्न है।महाभारत में राधा जहां श्रीकृष्ण की प्रेरक शक्ति के रूप में दिखाई देतीं हैं,वहीं पदावली में विद्यापति ने कृष्ण की उद्दाम कामवासनाओं से प्रेरित राधा का रूप देखने को मिलता है। [7]

पदावली में जो कुछ वर्णित है उससे कोई भी उन्हें भक्त कवि नही मान सकता क्योंकि भक्त कवि अवने आराध्य को इस प्रकार श्रृंगार से मण्डित करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। विशेषकर, दूती एवं सखी–शिक्षा–प्रसंग में जो राधाकृष्ण का अमर्यादित रूप प्रस्तुत किया गया है वह केवल कोई श्रृंगारी कवि ही कर सकता है, भक्त कवि नहीं।अतिशय श्रृंगार का एक वर्णन विद्यापति की पदावली से देखिए–

लीलाकमल भमर धरु वारि।
चमकि चलिल गोरि–चकित निहारि।
ले भेल बेकत पयोधर सोम।
कनक–कनक हेरि काहिन लोभ।
आध भुकाएल, बाघ उदास।
केचे–कुंभे कहि गेल अप्प आस। [8]

कुछ आलोचक उन्हें भक्त भी मानते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि निम्बार्क द्वारा प्रतिपादित द्वैताद्वैतवाद दार्शनिक सिद्धान्त के अनुरूप रागानुगाभक्ति का दर्शन इनके पदों में होता है और उनके पदों में राधाकृष्ण की लीलाओं के वर्णन भक्ति–भावना के परिप्रेक्ष्य में देखे जाने चाहिएं। डॉ ग्रियर्सन भी इसी मत की ही तरह लिखते हैं– विद्यापति के पद लगभग सब के सब वैष्णव पद या भजन है और सभी हिन्दु बिना किसी काम–भावना का अनुभव किए विद्यापति की पदावली के पदों का गुणगान करते हैं।

श्री नगेन्द्र नाथ गुप्त ने तो उन्हें भक्त प्रतिपादित करते हुए विद्यापति के पदों को शुद्ध अध्यात्मभाव से युक्त बताया है।

डॉ जनार्दन मिश्र ने विद्यापति की पदावली को आध्यात्मिक विचार तथा दार्शनिक गूढ रहस्यों से परिपूर्ण माना।

डॉ श्यामसुन्दर दास के अनुसार हिन्दी के वैष्णव साहित्य के प्रथम कवि मैथिल कोकिल विद्यापति हैं। उनकी रचनाएं राधा और कृष्ण के पवित्र प्रेम से ओतपोत हैं।

कुछ आलोचकों का कहना है कि विद्यापति ने पदावली की रचना वैष्णव साहित्य के रूप में की हैं कवि गीत गोबिन्दम् की भान्ति उनकी पदावली में राधा–कृष्ण की प्रेंममयी मूर्ति की झांकी दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने अपने इष्ट की उपासना सामाजिक रूप में की है। इस दृष्टिकोण से उन्होंने विद्यापति के उन पदों को उद्धृत किया है जो विद्यापति ने राधा, कृष्ण, गणेश शिव आदि की वन्दना के लिए लिखे हैं। राधा की वन्दना–विषयक एक पद देखिए–

देखदेख राधा–रूप अपार।
अपुरुष के बिहि आनि मिला ओल।
खिति–बल लावनि–सार ।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत,
हेरए पडए अधीर।

यही नहीं, उन्होंने प्रार्थना एवं नर–नारी के प्रसंग में भी अनेक देवीदेवताओं, राधाकृष्ण, दुर्गा, शिव, विष्णु, सूर्य आदि की वन्दना की हैं।कुछ समालोचक ऐसे भी हैं जो विद्यापति के श्रृंगारिक पदों की ओर ध्यान दिए बगैर ही उनके प्रार्थना सम्बन्धी पदो के आधार पर ही उन्हें भक्त कवि मान लेते हैं। यह सत्य है कि उन के कुछ भक्ति परक पद हैं परन्तु श्रृंगार परक रचना अधिक है यहां तक कि भक्ति परक पदों में भी श्रृंगार का अतिशय वर्णन किया गया है। [9]

विद्यापति के अनेक पदों से यह स्पष्ट है कि विद्यापति वास्तव में कोई वैष्णव नहीं थें केवल परम्परा के अनुसार ही उन्होंने ग्रंथ के आरम्भ में गणेश आदि की वन्दना की हैं। उनके पदों को भी दो भागों में बांट सकते हैं। 1–राधाकृष्ण विषयक 2शिवगौरी सम्बन्धी। राधा कृष्ण सम्बन्धी पदों में भक्ति–भावना की उदात्तता एवं गम्भीरता का अभाव हैं तथा इन पदों में वासना की गन्ध साफ दिखाई देती है। धार्मिकता,दार्शनिकता या आध्यात्मिकता को खोजना असम्भव है। शिव गौरी सम्बन्धी पदों में वासना का रंग नहीं है तथा इन्हें भक्ति की कोटि में रखा जा सकता है। [10]

राधा कृष्ण विषयक पदों में विद्यापति ने लौकिक प्रेम का ही वर्षन किया है। राधा और कृष्ण साधारण स्त्रीपुरुष की ही तरह परस्पर प्रेम करते प्रतीत होते हैं तथा भक्ति की मात्रा न के बराबर है।

इस तरह कहा जा सकता है कि विद्यापति श्रृंगारी कवि हैं उनके पदों में माधुर्य पग पग पर देखा जा सकता हैं।उन्होंने राधाकृष्ण के नामों का प्रयोग आराधना के लिए नहीं किया है अपितु साधारण नायक के रूप मे पेश किया है तथा विद्यापति का लक्ष्य पदावली में श्रृंगार निरूपण करना है। कवि के काव्य का मूल स्थायी भाव श्रृंगार ही है। राज्याश्रित रहते हुए उन्होंने राजा की प्रसन्नता में श्रृंगारपरक रचनाएं ही कीं इस में सन्देह नहीं। [11]

इसके अंतिरिक्त विद्यापति के समय में भक्ति की तुलना में श्रृंगारिक रचना का महत्व अधिक था। जयदेव की गीतगोविन्द जैसी रचनाएं इसी कोटि की है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विद्यापति श्रृंगार के कवि हैं तथा उनके काव्य में भक्ति की तुलना में श्रृंगार रस का ही वर्चस्व है।

सन्दर्भ सूचि–

1 डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ72
2 उपरोक्त
3 शिवदान सिंह चौहान हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष पृ67
4 डॉ बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य पृ76
5 डॉ हरीश चन्द्र वर्मा हिन्दी साहित्य का आदिकाल पृ42
6 डॉ भोला नाथ तिवारी हिन्दी साहित्य पृ36
7 डॉ नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ112
8 विद्यापति पदावली
9 उपरोक्त
10 डॉ गणपति चन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास पृ80
11 डॉ राम खिलावन पाण्डे हिन्दी साहित्य का नया इतिहास पृ34